

—अणिमा १६२  
३०.५.६२  
शिशु गीत और खेल

(२३)  
[मैथिली लोकगीत में]

Nov  
S71.421 (mat)  
SIN

संकलयित्री  
डाक्टर प्रोफेसर अणिमा सिंह  
लेडी ब्रेवोर्न कालेज,  
कलकत्ता



प्रकाशक  
मिथिला दर्शन ग्राह्वेट लिमिटेड  
१४ बी, ब्रजनाथ मिश्र लेन,  
कलकत्ता-६

शु  
छ,  
छि  
थि,  
करा  
ती मे  
रहनो  
खगण  
होइछ,  
उफेछ।  
ताइछ।



● प्रकाशक :

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

१४ बी, ब्रजनाथ मित्र रोड,

कलकत्ता-६

● मुद्रक :

सिंह प्रेस

१६२/८०, लेक गार्डन्स,

कलकत्ता-४५

● प्रथम संस्करण :

१९६६

१००० प्रति

● मूल्य :

६० पैसे

आमुख

मानव जीवन में शिशु-गीत एवं क्रीड़ा क मङ्गलता सदजति बहुत अधिक है। बाल-लीला एवं शिशु-विषयक सहज उद्गार सँ पापाणो हृदय एक बेर आनन्द-विह्वल भ' ज' सकै। विश्व क कोनो साहित्य एहि रमणीय वातावरण क उपेक्षा नहि क' सकल अछि। सूर-तुलसी आदि श्रेष्ठ कवि लोकनि क बाल-वर्णन देखवे योग्य अछि। किन्तु एतय संगृहीत गीत-माधुरी आन कोनो काव्य मे दुर्लभ अछि। शिशु-विषयक एहन सरस गीत सँ जे कोनो भाषा साहित्य गौरवान्वित भ' सकै। लोक-मनीषा द्वारा एकर अनुपम वर्णन भेल अछि।

मैथिली मे केक प्रकार क शिशु-गीत गाओल जाइछ। किछु गीत तँ कननिद्वार नेना केँ चुप करवा क लेल गाओल जाइछ, किछु गीत तखन गाओल जाइछ जखन शिशु खाइत नहि गछि और माय वा आन स्त्री ओकरा फुसला कए खुआवेँ चाहैत छथि, किछु गीत ओकरा सुखपूर्वक सुतेबाक लेल गाओल जाइछ, जकरा हिन्दी मे 'लोरी' बंगला मे 'बूमपाड़ानी गान' तथा अंग्रेजी मे 'ललावाइ' कहल जाइत छैक। एकर अतिरिक्त किछु एहनो शिशु गीत भेटैछ, जकरा शिशुक जन बहलावक लेल स्थान गानैत छथि। किछु शिशु गीत मे प्रायः कथात्मकता होइछ, किन्तु ओहि कथात्मकता क निर्वाह नीक जकाँ नहि भ' सकै। बीच मे श्रृंखला टटि जाइछ वा उदपुटोना वात आवि जाइछ।



एहि गीत सभ क तुक और छन्द-योजना में प्रचुर लोच पावैत छी अनेक प्रकार क अंग-संचालन तथा सुन्दर भाव-भंगी क संग अभिव्यक्त होमैवाला गीत बड़ मनोहारी लगैछ। किछु गीत में गृहस्थी क समस्या क समावेश रहैछ। एहि में गृहस्थी सँ सम्बन्धित वस्तु सभक तथा परिवार क स्त्री लोकनिक पारस्परिक सम्बन्ध क चुस्त और सुन्दर वर्णन भेटैछ।

खेलवा काल खेलाड़ी सब गीत क उपयोग करैत छथि। एहि गीत सब के खेलाड़ी क मन क उल्लास और उमंग अभिव्यक्ति भेटैछ। खेल क क्रम और विधि क अनुरूप ओकर छन्द-योजना होइछ। अधिकांश खेल में गीत क पद बहुत कम होइछ; किन्तु ओहि पद क आवृत्ति विभिन्न रूप में विभिन्न शारीरिक चेष्टा क प्रदर्शन द्वारा कैल जाइछ। खेल और एतद्विषयक गीत असंख्य अछि।

—अणिमा सिंह

## शिशु-गीत

१

अट्टा—पट्टा

अजब के सात गो चेटा

एक टा गोल गाय में

एक टा गोल भैंस में

एक टा गोल हाथी में

एक टा गोल घोड़ा में

एक टा गोल बकरी में

एक टा गोल छकरी में

एक टा गोल भेड़ी में

खिरिया-पुड़िया रिन्हलह

अपना खेलह ?

— हँ

हमरा लेल राखलह ?

बिलाइ छाया गोल

चल गुड़गुड़िया, चल गुड़गुड़िया,

धोदरी सना गुड़गुड़िया।

चान मामू, चान मामू, हँसुआ दे।  
 सेहो हँसुआ कथी ले ? -- खड़वा कटावै ले।  
 सेहो खड़वा कथी ले ? -- बंगला छरावै ले।  
 सेहो बंगला कथी ले ? -- गैया हुकावै ले।  
 सेहो गैया कथी ले ? -- चोतवा पुरावै ले।  
 सेहो चोतवा कथी ले ? -- अंगना निपावै ले।  
 सेहो अंगना कथी ले ? -- गहूमा सुखावै ले।  
 सेहो गहूमा कथी ले ? -- मैदवा पितावै ले।  
 सेहो मैदवा कथी ले ? -- पुड़िया पकावै ले।  
 सेहो पुड़िया कथी ले ? -- भौजो के खियावै ले।  
 सेहो भौजो कथी ले ? -- बेटवा विद्यावै ले।  
 सेहो बेटवा कथी ले ? -- गुल्ली-डंडा खेले ले।  
 गुल्ली-डंडा टुटि गेल, बधुआ रुसि गेल।

चान मामू, चान मामू,  
 आरे आवू, पारे आवू।  
 नदिवा किनारे आवू,  
 चानी के कटोरिया मे,  
 दूध-भात नेने आवू।  
 हसर चुनुषाक मुँह मे छुटक,

चान मामू, चान मामू,

चल मे रंकी, दाहि दरि ले।  
 केकरा जांत  
 छोटका मामू के चकरी।  
 अटकन देलकैन, मटकन देलकैन,  
 सव दाहि खेलकैन चकरी।  
 लये गहूम के लवपच पुरिया,  
 बाबा बगीचाक आम मे।  
 खाइ-पी ले मे रंकी नौरिया,  
 जेबे सिपेकर धान मे।  
 माइ ले किनिहे नीक-नीक चूड़िया,  
 बहिन ले किनिहे धारी मे।  
 माइ हेरतौ ज़ारी-भारी,  
 बहिन हेरतौ फूलवाड़ी मे।  
 दादी हेरतौ खाट तुरैया।  
 मृतु ले चोपिया मे।

चुधुआ झूल, मलेल झूल,  
 कोन गाम झूल, पटना झूल,  
 पटनाक धिया-पुता बड़ि लटकी।  
 आँधी आणल, चुन्नी आणल  
 चम्पा फूल उधियाण गेल  
 लोड़ी बिच्छी रहि गेल



मामू आवे छै होदा पर  
 उतरह मामू खडाम पर  
 बैठह मामू चौका पर  
 बाबू राम के बेटी  
 हाथ मे गुलेती  
 मारै लगल छौकी  
 उड़ि गेल पड़ोकी  
 लव पर लेबह कि पुरान घर ?  
 लव घर उठो रे उठो  
 पुरान घर खसो ।

६

धुधुआ भूल, गलेल भूल  
 कोन गाम भूल बेली भूल  
 बेली पिताम्बर नाग की  
 सोनमनि भा टिक भूला  
 पोखरिकात कात हिरला लगा  
 हिरला गेलौ दूटि  
 मुनु गेलौ हसि

७

हाथी-हाथी रडन दे,  
 बोल टन टन दे ।  
 बड़का-बड़का कान दे,  
 एसे टा बथान दे ।

८

अलिषा भूलै, भलिषा भूलै,  
 हमर मुनुवा हुमुचि भूलै ।  
 बाबा के बगिचवा मे,  
 अमुवा के निचवा मे,  
 कर-कों, कर-कों, गुल्ला,  
 पेंगा के चिचिल्लो ।

९

अटकन भटकन दहिया भटकन  
 माघ मास करेला फरे  
 जामुन गोटी जामुन गोटी  
 ऐतरी सोहाग गोटी  
 बांस काटे ठाँव ठाँव  
 नदी गुंगुवायल जाय  
 कमलक फूल हुनू अलगल जाय  
 छोटी रानी बड़ी रानी गेली नहाय  
 कान मंडक तड़की गेलैन हेराय  
 आव की पहिरती कौआक ठोर  
 कौआ ठोर तड कारी  
 आव की पहिरती साई  
 साड़ी मे तड पिलुआ  
 आव की पहिरती खिलुआ

१०

लाल दीदी ने  
 की दीदी ने  
 एक रत्ती छालही चटलिओ ने  
 तेहि लै लाल कका मारलकै  
 आथ कोन घर नुकइयो ने  
 बाबा घर नुकइयो ने  
 बाबा बड़ चंलवा ने  
 धीधे बजार मे खसलहुँ ने  
 सब धरियतवा हँसलक ने  
 हमरो मामा हँसलक ने

११

छाता बाला मुनसा के आवै छै ?  
 पहुना आवै छै  
 नीमक गाछ पर की बजै छै ?  
 बेंग बजै छै  
 आरे पहुना छड़िकए ?  
 बेंग देवौ तड़ि कए  
 खइहौ सवाहि कए  
 हुक्का देखौ भरि कए  
 भम मारिहौ कसि कए

१२

लाल गाछी गेलहुँ  
 लाल आम पेलहुँ  
 चोभा लोलहुँ  
 बाबा के देलहुँ  
 धावा ही बाब छै बचिनिया छै  
 काजर बीजर केने छै  
 गधेपुर मे की छै  
 टिकुली सटायल छै  
 पौती मे की छै  
 हरमुनिया छै  
 गहना गुड़िया राखल छै



१३

काजर के कजरौटी बेटी,  
 हींगुर के मसाल ।  
 तार गाछ देख बेटी,  
 देख संसार ।

१४

अलिया ने, भलिया ने  
 गोला धरद खेत खाइ छौ ने  
 कहाँ ने ?— डीह पर ने ।  
 लीहक रखवार के ने ? मामू ने



मामू गेलै पुरैनिया गे,  
लाल-लाल बिछिया अनलक गे।  
कलहू तर पिन्हैलक गे,  
सासु के गोर लगौलक गे,  
ननद के ठनकैलक गे।

१५

तेल करै चुप चुप  
नुनु बाढ़ै लुप लुप  
तेली के तेलाय लागै  
नुनु के मोटाय लागै  
तेली माथा फूटै बेल  
नुनु माथा सोखै तेल

१६

चन्दा मामू अओना  
धुंघरु बजौना  
सोने सरवा  
दूध के कटोरवा  
चन्दा मामू घुटुक

१७

आको पाको  
दिया जराको

सोनक दिया रूपा क बाती  
नुनु सुतै सुखक राती  
कननी खिझनी पाछु जा  
हँसनी खेलनी आगु आ

१८

आहे माहे गोजा रोटी खा हे  
मरुआ के रोटी गौरी दाय के बेटी  
जाय छैन विदेसी  
रंगे रंग ढोल बाजै सुनहु परदेसी

१९

जे हमरा नुनु के नजर लगावै गुजर लगावै  
बासी बढनी धीपल खपड़ी  
तकरा मांग पर मारौं  
कैल करतूत डीठ मूठ  
नजर गुजर सब चूल्ही मे  
पट पटाइ दै

२०

ओर वोर  
नुनु जाय मामा कोर

२१

मैना गे तोहर गौना हैतो  
हैत न त की

सोलह सौ सुपारी अचसी  
 आयत न त की  
 बारह हाथ के साड़ी अचसी  
 आयत न त की  
 लवका घर में फदका करिई  
 करव न त की

२२

सुते सुते रे नुनु बाल बचना  
 माइ गेलौ कूटै पीसै बाप गड़ीमान  
 दादा के कैल सनक दादी बदनान

२३

नुनु खाव दूध भत्ता  
 बिलैया चाटै पत्ता  
 जौं जौं पत्ता उधियायल जाय  
 तौं तौं नुनु रुसल जाय

२४

बाधा हो कका हो सुगा खाइख' धान हो  
 होकी बेटी लछमी  
 गोड़ में देखो पैजनी  
 चलो सुभद्रा फूल तोड़ै लै  
 फूले गाल तर आवल जमाव  
 बेटी के लेलकौ दोली चढ़ाए  
 जौं जौं बेटी हँकरल जाय  
 तौं तौं कहिया पड़रल जाय

घर के लागल दाँती  
 कनिया पिटैये छाती  
 चल रे भोकना हाथी  
 घर बैठल घर तर  
 कनिया बैठल पीपर तर

२५

अलेल मलेल के जरना  
 तुलसी फूल के छरना  
 मामा अवैछौ मामा  
 कथी पर हाथी पर  
 उतरौ मामा खड़ान पर  
 बैसौ मामा पिढ़िया पर  
 साठी धान के चूड़ा रे चूड़ा  
 धेनु भँस के दूध  
 मामा खेता दही खूड़ा नुनु खेते जूठ

२६

हाहो रे परवतो सुगा  
 हमरा खेत में जइई सुगा  
 मामा के खेत जँई सुगा  
 एकटा सीस अनिई सुगा  
 घोंघा मे भाव करिई सुगा  
 सितुआ मे माइ पसई सुगा



अपना लीई परतवा मे  
 तुनु के दीई कटोरवा मे  
 ते ले तुनु रुसल जाय  
 थावा काका बौसने जाय  
 चल रे तुनु इसर खरिहान  
 खेत मे देवी एक सूप धान  
 लेकर किनिहे गूआ पान  
 पान बला के पाने नहि  
 ते हमरा नुनू के दाते नहि

२७

हे मे विलैया कतय जाइछे ?  
 माछ मारे ।  
 केना मारवै ? छव्वर छैया ।  
 केना आनवै ? टांगि टूंगि ।  
 केना काटवै ? हंसुआ कचिया ।  
 केना रिन्हवै ? छन्नर पन्नर ।  
 केना खेवै ? नम्मा चौरी ।  
 केना पादवै ? टी टाँय ।

२८

एक तारा दू तारा  
 मनमा गोपाल तारा  
 मनमा क बेटी बड़ भगराहि

भगइत भगइत गेल गंगा पार  
 गंगा मैयो बालू वै  
 सेहो बालू कनूनिया ले लेल  
 कनूनिया बेचारी फुटहा देल  
 सेहो फुटहा चरवाहा लेल  
 चरवाहा बेचारा दूध देल  
 सेहो दूध बिलाइ पी गेल  
 बिलाइ बेचारी मूस देल  
 सेहो मूस चिलहा लै गेल  
 चिलहा बेचारा पंखा देल  
 सेहो पंखा मामू के देल  
 मामू बेचारा घोड़ा देल  
 मामी एगो खुदियो ने देल

२९

आ रे कुत्ता आइ जो  
 नगरी डोलाय जो  
 नगरी मे आगि लागलौ  
 बाप के डोलाय जो  
 बाप देलकौ अंगा टोपी गुदरा कै  
 नाक मे घुलाकी देलकौ तबला कै  
 साँझ वै मे सँभली बिछौना बिछाने मन्तरी  
 जो गहूम के कटनी धक्का मार ने गोतनी



३०

आ रे कुत्ता आ  
मंगरी डोला  
मंगरी मे आगि लागलौ  
वाप के बोला

३१

ननरो दास मे ननरो दास  
बेटा कानखो खोपरी मे  
काने दे जनपिठा के  
नाथे दे पमरिया के  
देखे दे सिपहिया के

३२

जटकन मटकन दहिया चटकन  
माघ मास फरे करेला  
ओहि करेला क नाम की  
आप जाय तेवरी सोहाग  
सिही लेवौ कि मंगुरी

३३

हले हले नुन हले  
भाइ ठकसिनिया वाप भले  
पितिया तोहर राजकुमार  
फूफा छ' कलवार के

३४

सुत मे नुन सुतौनी देवौ  
बगरो के टाँग छे खपौनी देवौ

३५

आ आ रे खजन चिहैया  
अंढा पाड़ि पाड़ि ओ  
तोरो अंढा आगि लागौ  
नुन के आँखि मे नीन

३६

एलसन धेलसन  
धोविया क पाट सन  
कुम्हरा क चाक सन  
भनसिया क फठौत सन  
केरा क थम्ह सन  
भोकना बिलार सन  
नुन ननिहर देख  
नुन ददिहर देख



## खेल क मोत

३७

भुभुरकोना

भुभुरकोना भुभुरकोना कोन कोना जाएव ?  
एहि कोना जाएव ?  
ऊँ हूँ । ओहि कोना ।  
भुभुरकोना भुभुरकोना कोन कोना जाएव ?  
एहि कोना जाएव ?  
ऊँ हूँ । ओहि कोना ।

३८

रजकोतवाल

हमरा बाड़ी, हमरा बाड़ी के ठनके ?  
रजकोतवाल ।  
की-की मैंगेये ?  
आरव चाउर नव डकना,  
राजा पठौलन्हि कटहर है  
ई त फूलले अछि  
ई त फरले अछि  
ई त काँचे अछि  
ई पाकल अछि

२१

३६

मेना के बका हिरोलिया रे, दूटा जामुन गिरा  
कचा गिरैवें त मारवो रे, दू गो पछा गिरा

४०

कवड्डी

चल कवड्डी करिया  
पकड़ि ले चरिया  
धना दे हरिया  
चल कवड्डी छुर  
चल कवड्डी छुर

४१

चल कवड्डी आरल  
मुलतानगज हारल  
बिल्ली के पछाइल  
के नाम छए पुकारल ?

४२

चल कवड्डी टोंश्या  
पटक दे मुँव्या  
कनी देख ले रे गुँइया



४३

चल कबड्डी चटका  
उठा कए पटका  
हुलि दे बे - खटका

४४

मरल के हे, मरै दहो  
काशी जी मे जरै दहो

४५

चेत कबड्डी चेतकदार  
हाड़ न टूटै खबरदार

४६

तार काटौ तरकुन काटौ  
काटौ रे खरवूजा  
हाथी पर के र'न गिरल  
ट'न महाराजा

४७

हे राजा !  
की परजा ?  
तोहर घोड़ा धान किये खैलक ?  
खैवे करत

घोड़ा के बान्हि दिय' कि छोड़ि दिय' ?  
बान्हि दिय' ।

४८

घोषो रानी, कतना पानी ?  
घुड़ी तक ।  
घोषो रानी, कतना पानी ?  
ढेंगहुन तक ।  
घोषो रानी, कतना पानी ?  
ग'र तक ।  
घोषो रानी, कतना पानी ?  
नाक तक ।  
घोषो रानी, कतना पानी ?  
माथा तक ।  
ई घर काटौ ?  
नहि ।  
ई घर काटौ  
नहि ।

४९

हे धक देहनो देहनो देहनो,  
तू छुपकल छ' केहनो ?  
दम छुपकल छी तोरे काटे लै,  
तू लटकल छ' केहनो ?



हम लटकल छी प्रसाद चढ़ै ले  
तू छुपकल छौ केहनो  
धक टेहनो टेहनो टेहनो

१०

तारनी बाबू तार कटावै रेल बनावै रेल  
रेल चलै धक धक धुँवाँ पेंकै फक फक  
आनापुर मे दाना मिलै भागलपुर मे भात  
काशी जी मे दुधकी मारै चल गुरु के साथ

११

एंग लरी बेंग लरी जमुना लरी  
जमुना मे दाल गिरै मामी मरी  
मामी के बेटा कूबत खरी  
हम हुनु भाय पटना जाय  
पटना सँ दू चोली मैगाय  
पुतहु पीन्है सासु भमकाय  
नदी किनार मे बगुला बैठे  
अहरा चुनि चुनि खाय  
सिंघी मछलिया काँट चलावै  
कलपि कलपि दिन जाय  
अगिया अगिया घुरै घोड़ा मे जाय

१२  
करिया भुम्भरि

हे मगलो,  
की छोदको ?  
बड़को कहाँ नेल ?  
घाँस काटै।  
घाँस मे की ?  
पौंती।  
पौंती मे की ?  
भरनी।  
भरनी मे की ?  
ककही।  
ककही मे की ?  
केस।  
केस मे की ?  
ढील।  
ढील मे की ?  
लीख।  
लीख पटापट मारै छी  
करिया भुम्भरि खेलै छी।

१३

करिया भुम्भरि  
पौंती मे की ? — भरनी  
भरनी मे की ? — कंघी

LIBRARY

SIN

कंधी मे की ? — केस  
 केस मे की ? — डील  
 डील मे की ? — छीख  
 छीख पटापट मारै छी  
 करिया भुम्मरि खेलै छी  
 लीख पटापट मारै छी  
 करिया भुम्मरि खेलै छी

१४

एनियों से बेनियों दरभंगा वाली कनिया  
 सेडो कनियों मांगै छै लोकनिया हे  
 कदम जोड़ी फूल  
 अपन भैया रहित डोली लागल जेतिदै  
 पितियोंत भैया लागै छै गै-चरवा घन हे

१५

आगु आगु कनियों लताम खेने जाय  
 पीछू सँ लोकनिया ठेकान केने जाय

१६

कनियनि मनियनि गिगा क मोर  
 कनियनि माइ के छै नेल चोर  
 दौड़' हो सहमौरा क लोग

१७

छोड़ा नौड़ा बंग पकौड़ा,  
 बंग के रोटी खो  
 बाप नेलौ पटना  
 बन्दूक ले कर जो

१८

दाहि दररी मूंग दररी  
 बाबा पोखरि मे धूम चकरी  
 भैया पोखरि मे बड़ मछरी

१९

लाल कका हो, लाल गाछी नेलौ  
 लाल आम पलौ, चोभा लगलौ  
 इनार मे डोल, घन घन डोल  
 आध नहि जायब पड़वरिया डोल  
 बाप छै, बचिनिया छै  
 पौती मे हरमुनिया छै  
 बोल हरमुनिया बोल

२०

लाल गाछी नेलौ लाल आम पलौ  
 पैरा पर के धैलौ  
 पैरा खोधि खोधि खाइवे

LIBRARY

451 SIN



अगिला कौआ भुल्लर भुल्लर, पड़िला कौआ चोर  
हमरा मचान पर ऐहे रे कौआ  
बाघ छौ बघिनिया छौ  
पौंती मे हरमुनिया छौ  
सिक्की के डाली चमेली के फूल  
राजा बम बम बोल

६१

कोआ रे कक्का, आम दे पक्का  
मारवौ चोभक्का दूकचल नै, खोधल नै  
कांच नै, कबकोहल नै आम दे पक्का,  
मारवौ चोभक्का, तब कह्यौ कक्का।

६२

हे चुहि चुहिया, पावनि कहिया ?  
दिन राति बीति गेल उल्लख कहिया ?

६३

खजन चिरैती खजन चिरैती कहिया लखन  
आइ नहि, काहिह नहि, परसू लवान



LIBRARY

4-4 SIN

VI

period of  
sistered at  
aged they  
turn down  
belonging  
reader shall  
book lent